ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

नो अभयं कृधि। सामवेद-274
प्रभो! हमें निर्भय- भयरहित कीजिए।
O God! make us fearless.

वर्ष 38, अंक 51 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 02 नवम्बर, 2015 से रविवार 08 नवम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

संस्कृत भाषा के संरक्षण के उद्देश्य से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम का द्वितीय वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

संस्कृतकुलम के ब्रह्मचारियों ने स्वयं सम्पन्न कराया यज्ञ

जनकपुरी नई दिल्ली, पूर्ण संस्कृत माध्यम् गुरुकुल-गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम का द्वितीय वार्षिकोत्सव जनकपुरी सी 3 आर्य समाज मंदिर में रविवार दिनांक 25 अक्टूबर 2015 को आयोजित हुआ। संस्कृत भाषा के संरक्षण के उद्देश्य से संचालित संस्कृत कुलम के बच्चों द्वारा विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मंगलाचरण के रूप में ब्रह्मसत्र-महायाग संस्कृत कुल के ब्रह्मचारियों ने स्वयं सम्पन्न कराया। स्तुति प्रार्थनोपासना के मंत्रों की व्याख्या एवं यज्ञ प्रार्थना संस्कृत में की गई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य द्वारा ध्वजा रोहण किया गया जिसमें वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्रों का पाठ ब्रह्मचारियों ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल द्वारा की गई। प्रसिद्ध समाज सेवी मनोज कुमार गुलाटी एवं अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महामंत्री एवं मुख्य वक्ता डॉ. रमाकांत व स्वामी जी को सम्मानित किया गया। संस्कृत शिक्षक संघ के सचिव डॉ. विश्वम्भर दयालु की गरिमामयी उपस्थि रही।

...शेष पेज 5 पर

पंजाब की घटना सोची समझी साजिश

...पाकिस्तानी आतंकवादी अब सिखों की वेशभूषा में सिख समुदाय को पूरे विश्व में बदनाम करने की साजिश रच रहे हैं। इन सब बातों के बाद भी यदि हम आंखें न खोल पायें तो यह हमारे देश के लिए बेहद दु:खद होगा...

मैं ने पिछले दिनों पंजाब में फैलते नशे के कारोबार और गुरुदासपुर में हुए आतंकी हमले पर खेद प्रकट करते हुए आशंका व्यक्त की थी गुरुदासपुर हमला कहीं 80 के दशक के आतंक की आहट तो नहीं! जैसाकि आप सब जानते हैं कि कई दिन पहले समाचार पत्रों के माध्यम से भी खबर आई थी कि पाकिस्तानी आतंकवादी अब सिखों की वेशभूषा में सिख समुदाय को पूरे विश्व में बदनाम करने की साजिश रच रहे हैं। इन सब बातों के बाद भी यदि हम आंखें न खोल पायें तो यह हमारे देश के लिए बेहद दु:खद होगा। कारण हमारी कमजोरी दुश्मन जानता है। जब हमारे देश में कोई छोटी-बड़ी घटना घटित होती है तो हम बिना उस घटना की गहराई में जाये, बिना विचार किये, सड़कों पर उतरकर विरोध जताते हुए सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाना शुरु कर देते हैं। बसों में आग लगाना, रेल, सड़क मार्ग बाधित करना मोटर साईकिल और दुकानें जलाना जैसे काम हमारे देश में विरोध जताने का हिस्सा सा बन गये हैं। जबकि इन घटनाओं पर आवेश में आने से पहले यदि हम कुछ पल पुनर्विचार कर लें कि यह सब क्यों हुआ? करने वाले की मंशा क्या थी? कहीं हमारे गुस्से का शिकार हमारे अपने लोग और देश तो नहीं हो रहा है तो हम

...शेष पेज 4 पर

आर्यरत्न पद्मभूषण श्री बृजमोहन लाल मुंजाल जी दिवंगत

समस्त आर्यजगत् में शोक व्याप्त

आर्यरत्न पद्मभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध उद्योगपति, श्री बृजमोहन लाल मुंजाल जी का 1 नवम्बर, 2015 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। 1 जुलाई, 1923 को आपका जन्म पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के एक साधारण सद्गृहस्थ परिवार में हुआ। आप अपने गांव कमालिया (अब पाकिस्तान में) के गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजे गए। प्रारंभिक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षित एवं आर्य संस्कारों से ओत-प्रोत, यज्ञ भक्त, एक आर्य युवा ने भारत विभाजन के उपरांत दिल्ली (पुलबंगश) से प्रारम्भ किए गए कारोबार को विश्व की बुलन्दियों तक पहुंचाया और एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया, जो अपने आप में अतुलनीय है।

हमें इस बात पर भी गर्व है कि जहां आज स्वदेशी की बात की जाती है, वहां पर भी आपने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। आपका व्यवसाय ऐसा प्रथम भारतीय व्यवसाय समूह हुआ जिसने जापान से प्राप्त तकनीक को छोड़कर इसे पूर्ण रूप से स्वदेशी व्यवसाय बनाया। आर्यसमाज के अनेक आर्य

...शेष पेज 8 पर

अभी बहुत सी गीताएं बाकी हैं
विशेष संपादकीय-पढ़ें पृष्ठ 2 पर

तकनीकी खराबी के कारण 'आर्य संदेश' का अंक 49 प्रकाशित नहीं हो सका। जिसके लिए हमें खेद है। -सम्पादक

स्वाध्याय

प्रभु कृपा से

उत नः सुभगां अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।। -ऋ. 1/4/6
*ऋषिः-**मधुच्छन्दाः।।** देवता-**इन्द्रः।।** छन्दः-**गायत्री।।***

शब्दार्थः- **दस्म**-हे पापनाशक इन्द्र! **अरिः उत**- शत्रु भी **नः सुभगान् (वोचेयुः)**- हमारी अच्छाइयों को, हमारे सौभाग्यों को कहें उ- और कृष्टयः वोचेयुः-सामान्य मनुष्य तो कहें ही। फिर भी हम **इन्द्रस्य इत्**-तुझ परमेश्वर के ही **शर्मणि**-सुख में **स्याम**-रहें, होवें।

विनय- हे पापों और बुराइयों का उपलक्ष्य करने वाले जगदीश्वर! तुम्हारी कृपा से मैं इतना उच्च हो जाऊं कि मेरी अच्छाइयों का बखान मेरे शत्रु भी करें। मेरी ओर से तो मेरा कोई शत्रु नहीं होना चाहिए, परंतु जो मेरे प्रतिद्वन्द्वी हैं-जिनके विचार मेरे विचारों से नहीं मिलते, जो मेरे वायुमण्डल से बिल्कुल उलटे वायुमण्डल में रहते हैं। उन मेरे विरोधी भाइयों के लिए यह स्वाभाविक होगा कि उनके कानों में सदा मेरे अवगुण ही पहुंचें और उनका दृष्टिकोण ही ऐसा होगा कि उन्हें मेरी बुराइयां ही सहज में दिखाई देवें, परन्तु हे प्रभो! यदि मेरा जीवन बिल्कुल पवित्र होगा, मेरे आचरण में सर्वथा सचाई और शुद्धता होगी तो मेरे जीवन का उस दूरस्थ (विचारों से मुझसे दूर रहने वाले) भाई पर भी प्रभाव क्यों न होगा? बस हे प्रभो! मेरे अन्दर से सब बुराइयों का नाश करके मुझे ऐसा उच्च बना दो कि जो मुझसे अत्यन्त विपरीत परिस्थिति में रहते हैं उन पर भी मेरी अच्छाई की, उच्चता की छाप पड़े बिना न रहे। सामान्य मनुष्य तो मुझे अच्छा कहेंगे ही, मेरी स्तुति करेंगे ही, परंतु इन विरोधियों के अन्तःकरण भी मेरी विशुद्धता को पहचाने, यही इच्छा है। अपने सच्चे विरोधियों से जो यश मिलेगा वह खरा यश होगा, उसमें अत्युक्ति आदि का खोट न होगा। मित्रों और उदासीनों से तो यश मिला ही करता है, उसमें कुछ विशेषता नहीं, उसका कुछ मूल्य नहीं।

परंतु हे प्रभो! इस यश को पाकर मैं फूल नहीं जाऊंगा, तुम्हें भूल नहीं जाऊंगा, वरन् इस यश को भूला रहकर सदा तुम्हारी ही याद में सुखी रहूंगा। यह यश मेरी विशुद्धता की पहचानमात्र होगा, यह मेरे सुख का कारण कभी नहीं होगा। मेरा सुख तो तुम्हारी शरण में है। बाहरी दुनिया चाहे मेरी घोर निन्दा करे, मुझे अपमानित करे, तो भी मैं तेरे प्रसाद से पाये सुख से वैसा ही सुखी रहूंगा जैसा कि बाहरी यश पाने पर हूं। मेरा सुख या दुःख बाहरी यश या अपयश पर अवलम्बित न होगा। हे प्रभो! ऐसी कृपा करो कि तुझ परमेश्वर की प्रसन्नता से पाये हुए सुख में ही मैं सदा सुखी, आनन्दित और सन्तुष्ट रहूं। बाहरी यश द्वारा सुख पाने की चाह मुझमें कभी उत्पन्न न हो। बाहरी यश मिलते रहने पर भी उस यश से सुख पाने की चाह मुझ में कभी उत्पन्न न हो। मैं तुम्हारे ही सुख में रहूं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

अभी बहुत सी गीताएं बाकी हैं

पाकिस्तान ने भारत की गीता को सकुशल लौटा दिया जिसकी चहूँ ओर प्रंशसा हो रही है, 23 साल की हो चुकी गीता उस समय महज सात या आठ साल की थी, जब वह आज से 15 साल पहले पाकिस्तानी रेंजर्स को लाहौर रेलवे स्टेशन पर समझौता एक्सप्रेस में अकेली बैठी मिली थी. पाकिस्तान में मानव अधिकार संगठन और सामाजिक क्षेत्रों में काम करने वाली संस्था बिलकीस एदी ने मूकबधिर गीता को गोद ले लिया था और तब से वह उनके साथ कराँची में ही रह रही थी। गीता की कहानी फिल्मी कहानी की तरह है। गीता ने अपने परिवार को एक तस्वीर के जरिए पहचाना था। यह तस्वीर उसे इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायोग ने भेजी थी। गीता का परिवार कथित तौर पर बिहार से है। फैजल एदी के अनुसार, गीता ने उन्हें सांकेतिक भाषा में बताया था कि उसके पिता एक बूढे व्यक्ति थे और उसकी एक सौतेली मां और सौतेले भाई-बहन थे।

बरहाल गीता वापस आ गयी अब उसके असली माता-पिता खोजे जाने बाकी हैं। भारत सरकार की ओर से गीता की वापसी पर एदी फाउन्डेशन को 1 करोड रुपये इनाम सहायता राशि देने की जो पेशकश की थी उसे भी बिलकीस बानो ने यह कहकर लेने से मना कर दिया कि उनका संस्थान सरकारी धन इस्तेमाल नहीं करता। पर फिर भी हमे शुक्रिया अदा करना चाहिए एदी फाडन्डेशन का जिसने आज के वहशी समाज और पाकिस्तान जैसे इस्लामिक मुल्क में जहां नारी को पैर की जूती समझा जाता है वहां इस मासूम को छत और मां-बाप की तरह प्यार दिया। उसकी वतन वापसी के भावुक क्षण पर एदी फाउन्डेशन की अध्यक्ष बिलकीस बानो ने भावुक होते हुए कहा हम पाकिस्तान चले जायेंगे, पर दिल में इसकी यादें रह जायेंगी। लेकिन जिस तरह पूरा देश इसे हाथों-हाथ ले रहा है, वह एक समाज के तौर पर हमारे संवेदनशील होने का सूचक है। यह बताता है कि हमें दूसरे के दुख-दर्द में खुद को शामिल करना आता है। भारत नाम के इस देश का अस्तित्व कागज पर खिंची कुछ लकीरों में नहीं है यह एक दूसरे के दिल में भी बसता है।

अब यदि हम एक गीता की वापसी का जश्न हर रोज मनायें तो हमको यह शोभा नहीं देगा क्योंकि यहां तो हर रोज सैंकड़ों गीता गायब होती हैं जिनका कोई अता-पता नहीं चलता। एक गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्था का मानना है कि दिल्ली व अन्य मेट्रो पोलटिन शहरों से बच्चों को उठाकर भीख मांगने, बाल मजदूरी, वैश्यावृत्ति व अन्य गैरकानूनी कामों में लगा दिया जाता है। लापता होने वाले इन बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर नज़र डालें तो पाएंगे कि गायब होने वाले अधिकांश बच्चे गरीब परिवार के होते हैं। देखा जाए तो इनके मां-बाप के बीच मारपीट, लड़ाई झगड़ा आदि बेहद आम घटना है। इससे निजात पाने के लिए भी कई बार बच्चे शुरु में घर से भाग जाते हैं। लेकिन उनमें से कुछ तो महीनों बाद लौट भी आते हैं और कुछ हमेशा के लिए गायब हो जाते हैं। दूसरा हमारे देश में बहुत बड़े स्तर पर बच्चों की चोरी हो रही है, लेकिन प्रशासन की ओर से कोई सार्थक कदम नहीं उठाया जाता है। जिसका परिणाम यह है कि हर साल गुम होते बच्चों की संख्या में इज़ाफ़ा ही हो रहा है।

समाचार पत्रों के अनुसार देश में वर्ष 2015 अप्रैल माह तक लगभग 130 बच्चे प्रतिदिन के हिसाब से गायब हुए। कुल मिलाकर साल में लगभग 15,988 बच्चे गायब हुए। इनमें से 6,981 खोजे नहीं जा सके। देश में हर आठ मिनट में एक बच्चा लापता हो जाता है। सबसे चिंताजनक स्थिति यह है कि इन गुम होने वाले बच्चों में लड़कियों का प्रतिशत 55 से भी ज्यादा है और 45 प्रतिशत बच्चे अब तक नहीं मिल पाए हैं। ये या तो मार दिये गये या भिक्षावृत्ति या वे वैश्यावृत्ति के धन्धे में धकेल दिए गये। कुल गुम हुए बच्चों की संख्या 3,27,658 है, जिनमें 1,81,011 (गीताएं) यानि कि लड़कियां है। अगर देखा जाये तो भारत में बच्चों की तस्करी के व्यापार में सामाजिक, आर्थिक कारण ही मुख्य भूमिका निभा रहा है। अशिक्षा, गरीबी, रोजगार का अभाव आदि भी कई बार बच्चों को बाहर निकलने के लिए मजबूर कर देता है या फिर अविभावक उन्हें बाहर भेजते हैं लेकिन उनमें से अधिकतर तस्करों के जाल में फंस जाते हैं। इस अवैध कारोबार को कड़े कानून द्वारा रोकने की बात की जाती है पर नतीजा ढ़ाक के तीन पात वाला ही रहा है।

लापता बच्चों का न मिलना उन माता-पिता की अंतहीन पीड़ा है जिन्हें वे जीवनपर्यंत अपने दिल से जुदा नहीं कर पाते। इसलिए गीता की वापसी पर सरकार द्वारा कुछ नये आयामों पर नज़र डाली जाये जो गुमशुदा बच्चों को तलाशने में मददगार हो और इनकी तस्करी पर पैनी नज़र रखी जाए। केन्द्रीय स्तर पर कोई मंत्रालय कोई टास्क सिक्योरिटी फोर्स का गठन किया जाना चाहिए। जाहिर सी बात है कि उन बच्चों को किसने उठाया? वे कौन लोग हैं? क्या ममता के ये मासूम टुकड़े इसी तरह लापता होते रहेंगे? आदि सवाल खड़े होते हैं। लेकिन इन सवालों का जवाब मिलना बाकी है, क्योंकि अभी बहुत सी गुमशुदा गीताएं मिलना बाकी हैं। ***-सम्पादकीय***

ग्रन्थ परिचय

वेदान्तिध्वान्त निवारण

प्रश्न 1: अद्वैतवाद अथवा नवीन वेदान्त के खण्डन के लिए क्या महर्षि ने कोई अन्य ग्रन्थ भी रचा था?

उत्तर: हां, महर्षि ने 'वेदान्तिध्वान्त निवारण' नामक ग्रन्थ भी नवीन वेदान्तियों अथवा अद्वैतवाद के खण्डन में लिखा था।

प्रश्न 2. इसकी रचना 'अद्वैतमत-खण्डन' के बाद हुई या पहले?

उत्तर: 'वेदान्तिध्वान्त निवारण' की रचना महर्षि ने 'अद्वैतमतखण्डन' के लगभग साढ़े चार वर्ष बाद की थी।

प्रश्न 3. 'वेदान्तिध्वान्त निवारण' कौन से वर्ष में लिखा गया था?

उत्तर: सह ग्रन्थ मार्गशीर्ष, संवत् 1931 में (सन् 1874) लिखा गया होगा, क्योंकि इसकी रचना महर्षि ने अपने प्रथम बम्बई निवास काल में की थी। उनका यह निवास काल कार्तिक कृष्णा-1, सं. 1931 से मार्गशीर्ष कृष्णा 12 तक (20 अक्टूबर से 5 दिसम्बर 1874) रहा। वैसे इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में इसका मुद्रण काल सं. 1932 वि. (सन् 1876) छपा हुआ है। इस के अनुसार, नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 1933 (26 मार्च, सन्1876) से पूर्व यह ग्रन्थ छप चुका था।

प्रश्न 4. इसका प्रथम संस्करण कहां से छपा?

उत्तर: इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 'ओरियण्टल प्रेस' बम्बई से छपा था।

प्रश्न 6. क्या इसके और संस्करण भी छपे थे? यदि हां तो कब?

उत्तर: हां, इसका दूसरा व तीसरा संस्करण भी छपा था, जिसमें प्रथम संस्करण की हिन्दी भाषा की अशुद्धियों को दूर करने का प्रयत्न किया गया था। द्वितीय संस्करण श्रावण, संवत् 1939 में प्रकाशित हुआ।

प्रश्न 7. यह ग्रन्थ किस भाषा में था?

उत्तर: यह ग्रन्थ संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में था।

प्रश्न 8. इस पुस्तक के लेखन में क्या विशेषता थी?

उत्तर: पं. देवेन्द्रनाथ जी द्वारा रचित महर्षि के जीवनचरित से इस पुस्तक के लेखन के विषय में दो विशेष बातें प्रकट होती हैं:-

1.) आश्चर्य की बात है कि अद्वैतवाद के खण्डन वि यक यह पुस्तक महर्षि ने घोर अद्वैवादी कृष्णराम इच्छाराम जी से लिखवाई।

2.) महर्षि ने इस पुस्तक का लेखन दो ही दिनों में समाप्त भी कर दिया था।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी) वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

वैदिक संस्कृति के मूल आधार

वैदिक वाङ्.मय के प्रख्यात विद्वान व भाषाशास्त्री डा. मंगल देव शास्त्री के मतानुसार ''किसी देश या समाज के विभिन्न जीवन-व्यापारों अथवा सामाजिक सम्बन्धों में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले उन आदर्शों की समष्टि को संस्कृति कहते हैं।''

(भारतीय संस्कृति का विकास-वैदिक धारणा)

प्रसिद्ध भारतीय विद्वान श्री शरद हेवालकर ने अपनी कृति ''भारतीय संस्कृति का विश्व संचार'' में संस्कृति की व्याख्या करते हुए कहा कि ''गुणानाम आधानं दोषानाम् अपनोदं करोति सा संस्कृति''

अर्थात् जो गुणों की वृद्धि और दोषों का क्षय करे, वह संस्कृति है। इस अर्थ में राष्ट्र, समाज, धर्म, इतिहास एवं परम्परा का आधार संस्कृति है।

पाश्चात्य विद्वान श्री बी. मैलिनास्की ने यूनेस्को द्वारा प्रकाशित ''A Scientific Theory of Culture'' पुस्तक में संस्कृति का अर्थ करते हुए लिखा है, ''संस्कृति का तात्पर्य उस सम्पूर्ण जटिल व्यवस्था से है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, विधि, नैतिक आचार, प्रथाएं और समाज के सदस्य के रूप में अर्जित अन्य सभी क्षमताएं तथा आदतें सम्मिलित होती हैं।''

वस्तुत: समाज के जीवन मूल्यों का समुच्य ही संस्कृति है।

वैदिक संस्कृति वेद-मूलक है। वेदों का अविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में हुआ। अत: वैदिक संस्कृति का जन्म भी सृष्टि उत्पति के साथ माना जाता है। वस्तुत: वैदिक संस्कृति किसी एक देश या समाज की संस्कृति नहीं, अपितु सम्पूर्ण जगत के मानव की संस्कृति है। वैदिक संस्कृति का प्रसार तो सम्पूर्ण भूमण्डल में हुआ किन्तु भारत इसके प्रसार-प्रचार का प्रमुख केन्द्र रहा है। सृष्टि-उत्पत्ति से लेकर आज तक वैदिक संस्कृति का प्रवाह निरंतर इसलिए होता रहा क्योंकि यह संस्कृति शाश्वत्, सार्वभौम और पूर्ण वैज्ञानिक है। अन्य संस्कृतियां वैदिक संस्कृति से जन्मी, किन्तु स्थानीय दोषपूर्ण तत्त्वों के शामिल होने के फलस्वरूप प्रदूषित होकर, यथा यूनान, मिश्र, रोम आदि की संस्कृतियां, काल कवलित हो गई।

मूल आधार

(1) वेद आधारित: मनुस्मृति में कहा गया है कि ''वेदो खिलो मूलम्'' (2/6) अर्थात वेद समस्त ज्ञान-विज्ञान के भंडार हैं।

आर्यों के धर्म व संस्कृति की भागीरथी वेद की गंगोत्री से ही प्रवाहित होती है। अत: आर्यों (हिन्दुओं) के धर्म, सदाचार, दर्शन कला, विज्ञान, समाज-व्यवस्था और राजनीति को जानने के लिए एक मात्र अबलम्ब वेद हैं। वेद वाणी में धर्म की मूल प्रेरणाओं का स्फुरण मिलता है। जर्मन विद्वान श्लीगल का कहना है कि सारी आर्य जाति वैज्ञानिकों की ही जाति थी। श्लीगल का समर्थन करते हुए ब्रिटिश विद्वान ''W.D. Brown'' ने अपनी कृति 'Superiority of Vedic Religion' में लिखा है, ''Vedic religion is thoriughly scientific religion where science and religion meet hand in hand. The theologh is based upon Science and Philosophy.'' अर्थात् वैदिक धर्म पूर्णत: वैज्ञानिक धर्म है, जहां विज्ञान व धर्म हाथ मिला कर चलते हैं। वैदिक धर्मशास्त्र विज्ञान और दर्शन पर आधारित है। वस्तुत: चारों वेदों में विमान शास्त्र, जलयान निर्माण, दूरदर्शन, रेडियम, इलैक्ट्रॉन, गणित, रसायन, भौतिक शास्त्र, ज्योतिष और चिकित्सा शास्त्र के सूत्र यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं।

(2) वैदिक संस्कृति का मूलभूत रूप आध्यात्मवाद है। आध्यात्मवाद का केन्द्रीय विचार आत्म तत्व अर्थात् ईश्वर है। आत्म तत्व ही विश्व बन्धुत्व तथा सार्वभौमिकता का आधार है। आध्यात्मवाद में ईश्वर भक्ति के अतिरिक्त धर्म, त्याग, तपस्या एवं निवृत्ति मार्ग को अपनाया जाता है। 'इदन्न मम' आध्यात्मवाद का प्रमुख कारक है। आध्यात्मवाद के अनुसार उन्नति का अर्थ आत्मा पर विजय पाना है, जबकि भौतिकवाद में उन्नति का अर्थ प्रकृति पर विजय पाना है। किन्तु वैदिक संस्कृति में भौतिकवाद की उपेक्षा नहीं की गई है। अत: दोनों का सन्तुलन बनाए रखने के लिए 'पुरुषार्थ चतुष्टय' अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का प्रावधान किया गया है। धर्म को 'अर्थ' व 'काम' का नियामक माना गया है। महाभारत में कहा गया है, ''धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्म:-किन्न सेव्यते।'' अर्थात् अर्थ और काम की सिद्ध धर्म से ही हो सकती है। वेदव्यास जी ने महाभारत के अन्त में घोषणा करते हुए उद्बोधन किया, ''मैं हाथ ऊपर उठाकर उच्च स्वर से कहता हूं, किन्तु कोई नहीं सुनता है। धर्म में 'अर्थ' व 'काम' की उत्पति होती है, धर्म का आश्रय क्यों नहीं लिया जा रहा है। धर्म का त्याग किसी वांछित उद्देश्य से नहीं करना-न भय से न लोभ से और न जीवन के लिए ही। धर्म नित्य है, किन्तु सुख व दु:ख अनित्य है।'' महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में धर्म का सटीक अर्थात् बताते हुए वैदिक संस्कृति के समन्यात्मक रूप का दिग्दर्शन किया है- ''यतो न्यभुद्यनि: श्रेयस सिद्धि।'' अर्थात् जिससे लौकिक सुख व ऐश्वर्य और मोक्ष संबंधी परलोक की सिद्धि हो, वही धर्म है।

आध्यात्मवाद में मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है।

(3.) निष्काम कर्म: गीता में श्री कृष्ण अर्जुन को सार वचन कहते हुए आह्वान करते हैं ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' अर्थात् हे अर्जुन! कर्म करो, फल की इच्छा मत करो। किन्तु यह बहुत कठिन मार्ग है। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का फल चाहता है। सकाम कर्म अपने हित साधन का प्रयास है, जबकि निष्काम कर्म परहित को साधना है। वैदिक संस्कृति में परसेवा, परोपकार व दान को बहुत महत्त्व दिया गया है। स्वार्थ-त्याग ही वैदिक संस्कृति की प्रेरणा है। यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे। मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे। किन्तु निष्कामता का अर्थ निष्कर्मण्यता नहीं है। इसलिए गीता में कर्मयोग का भी उपदेश दिया गया है।

...शेष पेज 7 पर

संस्कृतम्

सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्। (सन्तोष:)

संसारे सर्वे जना: सुखमिच्छन्ति। सुखं शान्तिश्च तदैव भवतो यदा मनुष्य: सन्तुष्टो भवति। यत् किंचित् स्वकीयेन परिश्रमेण प्रयत्नेन च प्राप्नोति, तत्रैव सुखानुभूतिकरणं सन्तोष इत्युच्यते। ये जना: सन्तोषहीना भवन्ति, ते धनलाभे पिं पर्याप्त सुख सामग्रीसत्त्वे पि असन्तुष्टा सन्तो न्यदपि धनं प्राप्तुमिच्छन्तो भ्रमन्ति। एवं तेषां जीवनं दु:खमयम् अशान्तियुक्तं च भवति। जीवने सुखशान्तिलाभाय सन्तोषस्य महत्यावश्यकता वर्तते। सन्तोषस्य सद्भावादेव षयो मुनयो महर्षयश्च जगद्वन्द्या भवन्ति। सन्तोषे एव सुखमस्ति, न चासन्तोषे। असन्तुष्टा मृगतृष्णिकामिव मायामनुसरन्त: सदा दु:खिता भवन्ति। उक्तं च-

सन्तोषामृततृप्तानां, यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।।1।।

महाभारते भगवता व्यासेनापि सन्तोषस्य महत्त्वं प्रतिपादयतोक्तपस्ति।। 2 ।।

ये एवं विचारयन्ति यद् यदि वयं सन्तोषमाश्रयिष्यामस्तर्हि अस्माकमुन्नतिर्न भविष्यतीति ते वस्तुतो मूर्खा एव सन्ति। सन्तोषो पि महती श्रीरस्ति। तथा हि-

सर्पा: पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते, शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति।।
कन्दै: फलैर्मुनिवरा:। क्षपयन्ति कालं, सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्।।3।।

ये सन्तोषयुक्ता भवन्ति, तेषां कृते जगदेतत् सुखमयं भवति। यतो हि-

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या, सममिह परितोषो निर्विशेषो विशेष:।
स हि भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला, मनसि च परितुष्टे को र्थवान् को दरिद्र:।।4।।

अपि च- अकिंचनस्य दान्तस्य, शान्तस्य समचेतस:।
सदा सन्तुष्टमनस:, सर्वा: सुखमया दिश:।। 5 ।।

केचन सन्तोषस्य इममर्थं गृहणन्ति यद् मनुष्य: सर्व कर्म त्यजेत्, ते पि अतत्त्वज्ञा: सन्ति। सन्तोषस्य केवलमयं भावो स्ति यद् यत्किंचित् श्रमेण प्राप्नुयात्, तत्रैव सन्तोषं कुर्यात्। अनुचितै: प्रकारै: धनस्योपार्जने यत्नं न कुर्यात्। धनस्य कृते वा स्वकीयं स्वास्थ्यं न विनाशयेत्, सवेषामप्रियो न स्यात्। धनं सुखार्थं शान्त्यर्थं चास्ति, धनं चास्माकं कृते वर्तते, न तु वयं धनार्थं स्म:।

अतस्तावदेव धनं हितकरं वर्तते, यत: स्वास्थ्यमपि सुरक्षितं भवति, सुखं शान्तिं च प्राप्नोति। अत: सर्वेरपि सुखशान्तिप्राप्तयै सन्तोष उपादेय:।

-साभार : रचनानुवादकौमुदी

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द जी ऋत सत्य ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गये

ज ब-जब सृष्टि में ईश्वरीय वाणी वेदज्ञान के अभाव से संकट उत्पन्न होता है तब-तब मोक्ष से लौटकर महापुरुष का जन्म होता है। ऐसे व्यक्ति विश्वात्मा के वाहन होते हैं किन्तु वे परमात्मा के अवतार नहीं होते, परन्तु उनमें विषम परिस्थियों को मिटा देने के लिए शक्ति का संचार होता जाता है। अट्ठारहवीं व उन्नीसवीं सदी में भारत की विषम परिस्थितियों को चैलेंज के रूप में ष दयानन्द जी ने स्वीकार किया।

प्रथम घटना- ष दयानन्द जी के जीवन में महशिवरात्रि के पर्व पर रात भर जागकर शिव जी के मन्दिर में मूर्ति के सामने बैठकर उनके दर्शन की प्रबल इच्छा से सारी रात काट दी। शिवजी के दर्शन तो क्या होने थे, मन्दिर में सन्नाटा देखकर चूहे बिलों से निकल आये और मूर्ति पर चढ़े प्रसाद को खाने लगे और उछल-कूद करने लगे। यह सब देखकर मूलशंकर (बचपन का नाम) के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि ये कैसे देवता हैं जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं। इस समस्या का समाधान कोई नहीं कर सका यही कारण है कि अपने कार्यकाल में दयानन्द जी ने मूर्ति पूजा का जबर्दस्त खण्डन किया और रूढ़िवादिता के घोर शत्रु हो गये। यही घटना विश्व का कल्याण कर गई।

द्वितीय घटना:- दीपावली के महापर्व पर इस नश्वर संसार से विदा लेते समय अन्तिम बार कहा कि हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की! वाह क्या बात है किसी से न गिला न शिकवा अपितु अपने प्रभु द्वारा जो संसार चक्र चल रहा है और जिससे जीवों का कल्याण हो रहा है उस ईश्वर इच्छा का स्मरण करते हुए अन्तिम विदा ली और उस दीपावली में एक ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गये।

विलक्षण प्रतिभाशाली ऋषि दयानन्द: महर्षि दयानन्द सच्चे ईश्वर भक्त थे और इतना बड़ा आत्मबल था कि सदैव सत्य प्रकट करने में अग्रणी रहते थे। वे जानते थे जब तक असत्य का खण्डन नहीं किया जायेगा, तब तक सत्य का मण्डन नहीं होगा। यही कारण है कि एक तरफ दयानन्द थे और दूसरी ओर सारा संसार था। उन्होंने समाज की तमाम बुराइयों को सुधारने के चैलेन्ज को स्वीकार किया और पाखण्डियों को अपनी ओर चलाया। आज संसार में जो तमाम सुधारवादी विचार दिख रहे हैं वह सब ष दयानन्द जी की देन है।

आज करोड़ों आर्य भी असत्य खण्डन में असमर्थ है :- महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज खोलकर सदैव के लिए सत्य का मंडन और असत्य का खण्डन करने के लिए आर्यों को एक मंच दिया है और इदनमम का पाठ पढ़ाया था, परंतु आज हम मम-मम का पाठ तो पढ़ रहे हैं। इदं न मम को एक किनारे रख दिया हैं। आज अधिकांश आर्यों के परिवार से लेकर चारों ओर समाज में कदम-कदम पर धार्मिक, सामाजिक अन्ध विश्वास परोसा जा रहा है और हम असहाय मूक बनकर देख रहे हैं। हम महर्षि की आज्ञा की अवज्ञा व वैदिक सिद्धान्तों से समझौता करते जा रहे हैं। यदि आर्य जगत समाज की एक-एक बुराई को लेकर क्रमश: आन्दोलित, सामूहिक रूप से एक स्वर में हो जाये तो समाज में व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। हमें आर्यों का कार्य केवल आर्य समाज भवनों की रक्षा करना ही नहीं हैं अपितु बाहर भी निकलना पड़ेगा।

...अट्ठारहवीं व उन्नीसवीं सदी में भारत की विषम परिस्थितियों को चैलेंज के रूप में ऋषि दयानन्द जी ने स्वीकार किया...

महर्षि ने ज्ञान दीप द्वारा तमाम अन्धविश्वासों से सजग कराया:- स्वामी विरजानन्द जी से तीन वर्षों में आर्ष, अनार्ष साहित्य का ज्ञान प्राप्त करके रण क्षेत्र में उतर पड़े। ष दयानन्द समझते थे कि हिन्दू समाज का सम्पूर्ण ढांचा बिगड़ा हुआ है। वेदों और उपनिषदों के अर्थ का अनर्थ करके और पुराणों के कल्पित कथाओं व साहित्य से चारों ओर अन्धविश्वास फैल गया है। इसीलिए उन्होंने सबसे पहला प्रहार वेदों के अर्थों पर किया और सायणाचार्य, महीधर, मेक्समूलर आदि ने जो वेदों के अर्थ किये थे उन्हें नकार दिया क्योंकि वे इतिहासपरक अर्थ थे। महर्षि जी ने ईश्वर परक अर्थ करके वेदों का सत्य स्वरूप सामने रखा और एक नई हलचल मचा दी। जिससे धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिल गयी।

सम्पूर्ण भारतवासी पांच हजार साल से चली आ रही धार्मिक विचार धाराओं से बंधे हुए थे भारतियों को सत्य विचारधारा से अत्यन्त प्रभावित किया और आश्चर्य चकित थे कि एक देवदूत अकेला सम्पूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कुरीतियों पर कैसे निर्भीकता से प्रहार कर रहा है। एक नया आन्दोलन खड़ा हो गया।

महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रूढ़ी अर्थों को बदल दिया तथा धार्मिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार, राजनैतिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार सामाजिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार तथा पूर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, अन्ध पूजा पद्धति पर प्रहार तथा भारतवर्ष मुसलमानों व अंग्रेजों का गुलाम था, उससे मुक्ति हेतु स्वराज्य शब्द का दीप जलाया, स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया।

महर्षि दयानन्द जी वे सदैव के लिए आर्ष साहित्य रचकर ज्ञान दीप जला दीये:- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व ग्वेदादि भाष्य भूमिका वेदों का आर्ष भाष्य व जीवन निर्माण के सोलह संस्कारों के लिए संस्कार विधि तथा पंच यज्ञ महाविधि, गोकरुणा निधि, व्यवहार भानु व अन्य साहित्य रचकर और इनका निरन्तर प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज संगठन बना कर गये। आर्यों के लिए मार्ग निर्देशिका बना गये।

आर्यों का अतीत, वर्तमान व भविष्य:- महर्षि दयानन्द जी के दिवगंत के अर्ध शताब्दी तक आर्यों का त्याग का स्वर्ण युग था, वर्तमान में आन्दोलन तथा असत्य का खण्डन व आर्य नेतृत्व द्वारा कुरीतियों पर प्रहार एक स्वप्न रह गया है और सनातनी भद्र मूर्तियों की पूजा करते हैं और आर्य समाजी मंदिरों में यज्ञ की पूजा द्वारा ईश्वर को याद करते हैं। जो आर्य समाज का आन्दोलन था वह अतीत होता जा रहा है। नई पीढ़ी कल का आर्य समाज दिशाहीन है। उनको विरासत में आर्यसमाज मन्दिरों की रक्षा व रविवार को केवल 2 घंटे यज्ञ व सत्संग के संस्कार मिल रहे हैं। इसलिये जो वर्तमान में आर्य जगत में हो रहा है, भविष्य में वही होगा इसको नकार नहीं सकते हैं। आर्यों हमें आर्य समाज की दशा और दिशा पर चिन्तन करना ही पड़ेगा।

-पं. उम्मेदसिंह, विशारद

पृष्ठ 1 का शेष

पंजाब की ...

एक बड़ी आपदा और सामाजिक साम्प्रदायिक विघटन से बचे रह सकते हैं। अभी हाल ही में पंजाब के अलावा देश में कई घटनायें घटित हुई जो बेहद शर्मनाक हैं। जो समाज और राजनेताओं के लिये निंदा का विषय और प्रशासन के लिए कार्यवाही का विषय था। लेकिन कई बार हम छुट-पुट नेताओं के बहकावे-उकसावे में आकर खुद ही कार्यवाही का निर्णय ले लेते हैं जो दंगे-फसाद का रूप धारण कर लेता है और तब तक अपराधियों के मनोरथ सफल हो जाते हैं।

पिछलें दिनों ऐसी ही एक घटना ने दो दशकों के बाद शांत पंजाब को अचानक अशांत बना दिया इस बार विरोध की यह चिंगारी बरगारी गांव में 12 अक्टूबर को हुई घटना के बाद उठी। फरीदकोट जिले में कोटकापुरा के पास इस गांव में 12 अक्टूबर को गुरुद्वारे के पास के इलाके में पवित्र पुस्तक ''बीर'' के 100 से अधिक पन्ने फटे और बिखरे हुए पाए गए थे। ज्ञात हो इस वर्ष जून माह में गुरुद्वारे से इस पुस्तक की चोरी हुई थी। पवित्र पुस्तक के साथ इस बेअदबी ने सिखों को गुस्से से भर दिया और सबसे पहले पड़ोस के गांव बेहबल कला में विरोध प्रदर्शन की शुरुआत हुई। इधर सिखों का गुस्सा बढ़ता दिखायी दिया उधर, फरीदकोट के कोटकापुरा में पुलिस ने बेकाबू भीड़ पर फायरिंग कर दी और दु:खद बात यह है कि इस हवाई फायरिंग में दो सिख संगतों की मौत हो गयी जबकि दर्जनों लोग घायल हो गये। इस मौत ने सिख समुदाय के गुस्से की आग को और भड़का दिया। इसके बाद हाईवे-पुलों को जाम करने, दुकाने बंद कराने का सिलसिला चल पड़ा। प्रदर्शनकारी पवित्र पुस्तक की बेअदबी करने वालों के खिलाफ कार्यवाही की मांग कर रहे थे। यही नहीं इससे पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अपवित्र करने की पांच रिपोर्टस् सामने आई थीं। पवित्र धार्मिक ग्रंथ के फटे हुए पन्ने राज्य के अलग-अलग हिस्सों में पाए गए थे। लेकिन जब इस मामले की जांच कर रही (एसआईटी) ने खुलासा किया तो खबर सबको हैरान कर देने वाली पाई गयी कि विदेश में बैठीं पाकिस्तान द्वारा संचालित ताकतें पंजाब में धार्मिक भावना भड़का कर पंजाब और देश का माहौल खराब करने की साजिश रच रही है। पवित्र पुस्तक गुरु ग्रंथ साहिब के अनादर की वजह से पंजाब में व्याप्त तनाव के बीच मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने कहा है कि वह 'कुछ ऐसी शक्तिशाली ताकतों द्वारा की जा रही गहरी साजिश को, देख रहे हैं जिनकी कोशिश राज्य में फिर से आतंकवाद को जिंदा करने की है, हम जानते हैं गुरु ग्रंथ साहिब के अनादर से हर सिख की आत्मा आहत हुई है, लेकिन संकट के इस समय में हमें धैर्य से काम लेना होगा और देश को, राज्य को विकास और प्रगति के पथ से हटाने की विघटनकारी ताकतों के मंसूबों को नाकाम करना होगा।'

दरअसल पंजाब भारत का एक समृद्ध राज्य है, धार्मिक और सामाजिक रुप से देखा जाये तो हिंसा, उपद्रव की घटनाएं कम ही होती हैं तो भारत के दुश्मन जानते हैं कि भारत को कमजोर करना है तो पंजाब को कमजोर करना होगा। अब यह जिम्मेदारी पंजाब के वीरों की है कि दुश्मन की चाल को समझें और सम्भलकर चलें, तभी देश व राज्य में अमन चैन कायम रह सकेगा।

-राजीव चौधरी

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाजों की स्थापना

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अपने प्रान्त के विभिन्न संभागों में कार्यकर्त्ताओं की कार्यशाला का आयोजन निरंतर किया जा रहा है। विगत 1 वर्ष में अलग-अलग सभांगों में 8 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रान्तीय सभा के प्रचारक, भजनोपदेशक प्रान्तीय प्रचार हेतु प्राप्त वाहनों से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिमाह 10 से 15 दिन का निरंतर प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। इस कार्यकारिणी के प्रयास से अब तक 19 नई आर्य समाजों की स्थापना की जा चुकी है। इसके साथ ही स्थायी रूप से पुरोहित व प्रचारक, विद्वान आचार्य अपना समय देकर आर्य समाज दयानन्दगंज इन्दौर में नवयुवक विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने में संलग्न हैं। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्य में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य मार्ग दर्शन कर रहे हैं।

-दक्षदेव गौड़, उपमंत्री इन्दौर संभाग

ग्यारह कुंडीय सामूहिक यज्ञ, भजनों एवं प्रवचनों का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार ने 23 से 25 अक्टूबर 2015 को संध्या-प्रार्थना एवं यज्ञ का आयोजन किया। धर्मोपदेशक आ. हरि प्रसाद शास्त्री जी की तीन दिवसीय व्याख्यान माला में वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रंथों के आधार पर वैदिक विचारों पर चर्चा की।

श्री देवेन्द्र जी, सोनीपत ने अपने सुंदर भजनों द्वारा तथा तबला वादक श्री धनंजय जी ने सारे वातावरण में मधुर-स्वरों का रस घोल दिया।

आर्य समाज अशोक विहार-1 मेन पार्क में सामूहिक यज्ञ

आर्य समाज अशोक विहार-1 में दिनांक 11 अक्टूबर 2015 को एच ब्लॉक मेन पार्क में रोग निवारण यज्ञ शृंखला में सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया जिसमें 2 हवन कुण्डों में लगभग 10-12 यज्ञमानों द्वारा यज्ञ किया गया। यज्ञ ब्रह्मा एवं वक्ता सर्व श्री आ. सतीश चन्द जी शास्त्री एवं डॉ. आ. हरिदेव जी ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला।-**जीवन लाल आर्य**

महात्मा आनंद स्वामी के जन्मोत्सव पर 151 कुण्डीय यज्ञ आयोजित

दिनांक 27 अक्टूबर 2015 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 'आनंद पर्व' महात्मा आनन्द स्वामी के जन्मोत्सव के रूप में 16 व 17 अक्टूबर को डीएवी पब्लिक स्कूल, कोटा में मनाया गया। इस अवसर पर 151 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ का शुभारंभ पाणिनी महाविद्यालय से पधारी डा. प्रीति विमर्शनी के ब्रह्मत्व में किया गया। इस भव्य और श्रेष्ठ आयोजन के मुखातिथि रहे श्री पूनम सूरी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी कालेज के प्रबंधकर्मी समिति, नई दिल्ली तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता साध्वी उतमायति जी ने की।

दयानन्द ऋषि

न श्रुतिवान तुझसा, तेरे बाद आया।
दयानन्द षि तू, बहुत याद आया।।
स्मृति की सुरीली, परवाज तेरी
बहुत खूबसूरत थी, वेदशैली तेरी
जमाने को जिसने, सयाना बनाया
दयानन्द षि तू, बहुत याद आया।।1।।
तेरा गम अगरचे, बहुत है पुराना,
तुझे हमसे बिछड़े, हुआ इक जमाना
तेरा नाम कोई, नहीं भूल पाया
दयानन्द षि तू, बहुत याद आया।।2।।
चले जायेंगे हम, मुसाफिर हैं सारे
मगर एक दुखवां, है लव पे हमारे,
तुझे कितनी जल्दी, ईश ने बुलाया
दयानन्द षि तू बहुत याद आया ।।3।।
मेरा दिल फिर आज, सुखवां गया है,
जो संदेश मेरे सामने आ गया है,
कि लोगों ने तेरा, एहसान माना,
दयानन्द षि तू, बहुत याद आया।।4।।

-पं. सत्यवीर शास्त्री

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री की मारीशस के राष्ट्रपति से भेंट

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने मॉरीशस के राष्ट्रपति से भेंट के दौरान उन्हें अपना साहित्य भेंट करते हुए महर्षि दयानन्द की उस सद् इच्छा की चर्चा की जिसके अनुसार उन्होंने महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और ज्ञान देने पर बल दिया था।

राष्ट्रपति भवन में महामहिम अमीना गरीब फकीम से शिष्टाचार भेंट के दौरान अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने राष्ट्रपति महोदया की आयुर्वेद पर किये गये उल्लेखनीय कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनके और मॉरीशस वासियों के सुखद जीवन की कामना की।

ज्ञात हो राष्ट्रपति महोदया सुयोग्य लेखिका एवं अत्यन्त मृदुभाषी हैं। उन्होंने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को लेखक होने के नाते अपना स्वाभाविक सहयोगी बताया और उन्हें मॉरीशस भारतमैत्री को और सुदृढ़ करने की शुभकामना दी।

इस अवसर पर आर्यसभा मॉरीशस के महामंत्री श्री हरिदेव रामधनी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, वेदप्रचार समिति के महामन्त्री पं. श्याम दायबू आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

-सूर्यकान्त मिश्रा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
पटना पुस्तक मेले में साहित्य प्रचार
21 से 29 नवम्बर, 2015
स्थान : गांधी मैदान, पटना (बिहार)
समय : प्रात: 10 बजे से 7 बजे तक

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में जन साधारण को पुस्तक मेले में सभा के वैदिक साहित्य स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें एवं कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। अधिक जानकारी के लिए स्टाल पर श्री रवि प्रकाश जी से 9910324184 पर सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री

पृष्ठ 1 का शेष

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम्....

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रधान धर्मपाल आर्य ने संस्कृत आर्ष ग्रन्थों की कुन्चिका अष्टाध्यायी की महत्ता बताई। मुख्य वक्ता डॉ. रमाकांत स्वामी ने संस्कृत क्षेत्रीय सहयोग में हम गुरुविरजानन्द संस्कृत कुलम को ऐतिहासिक प्रस्तुति हेतु नामांकित एवं पुरस्कृत करेंगे। प्रधान श्री शिव कुमार मदान ने स्मरण कराया कि डॉ. रमाकांत गोस्वामी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम के ब्रह्मचारियों को दी जाने वाली व्यवस्था में आर्य जनता को अग्रसर होने हेतु दिशा-निर्देश किया है। इस अवसर पर संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। आर्य समाज आनन्द विहार हरि नगर के मंत्री महेंद्र सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। **- धनञ्जय शास्त्री, आचार्य**

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

The Truly Old

The common perception of an old man is that he shakes involuntarily due to physical weakness with a frail and fragile body. Here the verse states, "The courageous, resolute and benevolent counsellor among people who does not swerve a step off the righteous path due to censure or praise is truly old or wise. He wards off his friends and disciples from sin and unites them to perform beneficial acts."

According to the verse, young or old in age who by his behaviour inspires a cruel man to become a benevolent one; a wicked sinner to a polite one, a hater to a lover, is truly old. He encourages a coward to be courageous, a fallen one to arise, an ignorant one to be knowledgeable and a cruel one to be kind. His virtuous acts and aptitude and not the long length of years he lives, make him old or wise. Although young in age, his glory shines upon his surrounding. He earns and enjoys riches through righteous means. He is the dispenser of light to all who come in his contact. Free from blemish, passion, anger and greed, he stands as a beacon for mankind.

ये अग्ने नेरयन्ति ते वृद्धा उग्रस्य शवसः।

अप द्वेषो अप ह्वरो न्यव्रतस्य सश्चिरे।। (Rv v.20.2)

Ye agne nerayanti te vrddha ugrasya savasah

apa dveso apa hvaro anyavratasya sascire II

The Three Divinities

"May the ever-glorious blissful motherland, mother language and mother culture occupy respectable place in our heart. May we adore them in our performances and ceremonies."

Man owes gratitude to his land of birth, his mother tongue and his rich cultural heritage.

Ila, Mahi and Saraswati-the triad often find place in the reverential prayers of a devotee in Vedic texts. These are loving and fascinating words of the seers through which they inspire the chanters to widen the horizon of their wisdom, thoughts and deeds.

"May we offer homage to them through our noble deeds. May the three Goddesses be with us for our enlightenment. May we always extol their divine virtues" - thus pray the devotees in exhilarating and melodious tunes.

Worship of our divine land, language and culture brings us wisdom and felicity, We achieve our noble aspirations when we dedicate ourselves to their well-being and promotion. When they dominate over all our performances, then only we enjoy the full span of a happy life.

इला सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः।

बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः।। (Rv. I. 13.9)

Ila sarasvati mahi tisro devir mayobhubah/

Barhih sidantv asridhah II

The Husband and wife

"I accept your hand for good fortune and I Wish and pray you attain old age with me as your husband. Our Lord of grace, cosmic orders, creation and wisdom, have given you to me that I may be the master of a household."

"May you both abide here together," says the priest. " May you never be separated, may you live together all your life sporting with sons, grandsons, grand children and rejoice in your own home."

"O bride, may you never look upon your husband wih an evil eye and never be hostile to him. Be tender to animals and may you ever be amiable and cheerful. Be the mother of brave children. Loving to the divine powers, be the bestower of happiness, and bring prosperity to our bipeds and quadrupeds."

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्य त्वादुर्गार्हपत्याय देवा।। (Rv. x. 85.36)

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् । क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ।। (Rv. x. 85.42)

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।
वीरसूर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। (Rv. x. 85.44)

Grbhnami te saubhagatvaya hastam maya patya jaradastir yathasah I

bhago aryama savita puramdhir mahyam tvadur garhapatyaya devah II

Ihaiva stam ma vi yaustam visvam ayur vy asnutam I

krilantau putrair naptrbhir modamanau sve grhe II

Aghoracksur apatighny edhi siva pasubhyah sumanah suvarcha I

Virasur devakama syona sam no bhaba dvipade sam catuspade II

To Be Continued...

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का 93वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का 93वां वार्षिकोत्सव 24 नवम्बर से 29 नवम्बर, 2015 तक समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। दिल्ली प्रदेश की सभी आर्य समाज के अधिकारियों से निवेदन है कि कृपया इन दिनों में अपनी आर्य समाज में कोई कार्यक्रम न करके आर्य समाज हनुमान रोड के उत्सव को सफल बनाएं।

–कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा, प्रधान

आर्य समाज पटियाला में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर, चौंक आर्य समाज, पटियाला द्वारा दिनांक 14 से 18 अक्टूबर 2015 तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य हरी शंकर अग्निहोत्री (आगरा वाले) मुख्य प्रवक्ता के रूप में, डॉ. वीरेन्द्र विद्यालंकार, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़, आर्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मवेष जी और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक अरुण कुमार जी विशेष रूप से आमंत्रित थे। इस पूरे समारोह में पटियाला और आसपास के कस्बों के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

–वेद प्रकाश, तुली मंत्री

प्रेरक प्रसंग — हमारे बड़े

धारूर के पण्डित श्री आर्यभानुजी ने एक आर्य महासम्मेलन की एक घटना सुनाई थी। कुंवर सुखलालजी के पश्चात् श्री महात्मा हंसराजजी का भाषण होना था। श्रोता चाहते थे कि कुंवर साहब ही बोलते जाएं। ऐसी आवाजें सभा में सुनाई देने लगीं, इस पर कुंवर साहब ने कड़ककर कहा, आप यह शोर क्यों मचा रहे हैं? सहस्त्रों सुखलाल इस त्यागी, तपस्वी हंसराज के चरणों पर वारे जा सकते हैं। कुंवरजी के इस आवेशपूर्ण और प्रभावशाली कथन ने श्रोताओं को झकझोर दिया। सब शांत हो गये और महात्माजी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। ऐसे शिष्ट और विनीत थे हमारे महापुरुष। **साभारः तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी**

बोध कथा — कर्म कर, फल की कामना नहीं!

महात्मा हंसराज जी की एक बात याद आती है मुझे। अपना जीवन उन्होंने दान दे दिया। बड़े भाई पचास रुपये मासिक देते थे, इस पर निर्वाह करते थे वे। एक बार भाई अप्रसन्न हो गए। सहायता के रुपये देना बन्द कर दिया। महात्माजी के पास कोई पूंजी तो थी ही नहीं। घर में कुछ भी नहीं था। केवल छः आने थे उनके पास। घर में खाने को कुछ भी नहीं था। तीन दिन इसी प्रकार बीत गए। पत्रों में उन दिनों महात्माओं के विरुद्ध लेख छप रहे थे। घबराकर उन्होंने सोचा– 'मैं यह कौन–से मार्ग पर चल पड़ा हूं?' इस विचार के उत्पन्न होते ही वे घबराहट के साथ अपने छोटे–से कमरे में चलने लगे–इधर–से–इधर, उधर–से–इधर। चैन नहीं। मछली जैसे पानी के बिना तड़पती है, ऐसे उनका दिल तड़प रहा था। तभी वे अपने कमरे में रखी उस अलमारी के पास पहुंच गए, जिसमें पुस्तकें रखी थीं। एक पुस्तक को उन्होंने निकाला। उसका एक पृष्ठ खोला, वहां लिखा था–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः (गीता 2/47)महात्माजी ने मुझे बताया कि इन शब्दों को पढ़ते ही उनकी घबराहट दूर हो गई। ऐसा ज्ञान हुआ, जैसे सच्चा और सीधा रास्ता मिल गया है। ऐसा अनुभव हुआ जैसे कोई सामने खड़ा हुआ है– 'अरे घबरा क्यों गया?' तेरा काम केवल कर्म करना है, उसके फल की चिन्ता करना नहीं। फल को भगवान् पर छोड़ दो, आगे बढ़ो!'

उन्होंने बताया कि फिर कभी डगमगाना नहीं पड़ा। फिर कभी बेचैनी नहीं आई। यह है स्वाध्याय का फल!

साभार–बोध कथाएं

वेद प्रचार में आप भी बनें भागीदार

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार व भजनोंपदेशक मण्डल की नियुक्ति की गई है। भारत के समस्त आर्य समाज भजनोपदेशक मण्डल को आमंत्रित कर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने हेतु श्री एस.पी. सिंह जी से संपर्क करें। **संपर्क सूत्रः– 09540040324**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आपके सुझाव

आर्य सन्देश हेतु क्या आपके पास कोई ऐसा सुझाव व विचार है जिससे आर्य सन्देश को और अधिक लोकप्रिय बनाया जा सके? यदि हां तो आज ही अपने विचार व सुझाव हमें ई–मेल करें, हमारा पता है – **aryasandeshdelhi@gmail.com**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी श्रृंखला में आगामी 4 माह में दिसम्बर 2015 से मार्च 2016 के मध्य 12वें, 13वें, 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियों निश्चित कर दी गई हैं, जो इस प्रकार हैं -

12वां परिचय सम्मेलन (दिल्ली)
दिनांक 6 दिसम्बर, 2015
आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली
अन्तिम तिथि 20 नवम्बर,2015

13वां परिचय सम्मेलन (गुजरात)
दिनांक 3 जनवरी, 2016
वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुज.)
अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर, 2015

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)
दिनांक 14 फरवरी, 2016
आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, रतलाम (म.प्र.)
अन्तिम तिथि 30 जनवरी,2016

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)
दिनांक 27 मार्च, 2016
आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू
अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। **फार्म www.thearyasamaj.org/aryasandesh** से डाउन लोड किए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए राष्ट्रीय अथवा प्रान्तीय संयोजक से सम्पर्क करें।

: निवेदक :

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**	**अर्जुन देव चड्ढ़ा**	**एस.पी.सिंह**
मंत्री (09826655117)	महामंत्री (9958174441)	राष्ट्रीय संयोजक(09414187428)	संयोजक दिल्ली (09540040324)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**	**आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन**	

: प्रांतीय संयोजक :

गुजरात, सुरेश चन्द्र अग्रवाल-09824072509; राजस्थान, अमरमुनि -09214586018; उत्तर प्रदेश, डॉ. अशोक आर्य -09412139333; आन्ध्र प्रदेश, डॉ. धर्मतेजा-09848822381, छत्तीसगढ़, दीनानाथ वर्मा -09826363578; महाराष्ट्र, डॉ. ब्रह्ममुनि -09421951904; उत्तराखण्ड, विनय विद्यालंकार-09412042430; विदर्भ, कृष्ण कुमार शास्त्री- 09579768015; जम्मू-कश्मीर, राकेश चौहान- 09419206881; हरियाणा, कन्हैयालाल आर्य-09911179073, हिमाचल प्रदेश, रामफल आर्य-09418277714; ओडिशा, स्वामी सुधानन्द-0986133060; मध्य भारत, डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070; पंजाब, दिनेश शर्मा-09872880807; महिला संयोजिका, वीना आर्या- 09810061263; रश्मि वर्मा- 09971045191; विभा आर्या-09873054398

पृष्ठ 3 का शेष

वैदिक संस्कृति ...

(4) कर्म का सिद्धान्त: मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है किन्तु ईश्वर की व्यवस्था के अधीन कर्मानुसार फल भोगने में परतन्त्र है। 'अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं शुभाशुभ् से' कार्य-कारण का नियम भौतिक जगत का अटल नियम है। यही भौतिक जगत का कार्य कारण का नियम आध्यात्मिक जगत में कर्म का सिद्धांत है। कर्म तीन प्रकार के होते हैं- (क) संचित कर्म (ख) प्रारब्ध कर्म (ग) क्रियामाण कर्म। पिछले जन्मों से लेकर अब तक जो कर्म हैं, वे संचित कर्म हैं। जिन कर्मो का फल मिल चुका है या मिलने लग रहा है, उन्हें प्रारब्ध कहते हैं। वर्तमान में हम जो कर्म कर रहे हैं वे कर्म क्रियामाण कहलाते हैं। क्रियामाण कर्म पूर्ण होने पर वे संचित कर्मों की श्रेणी में आ जाते हैं।

(5) पुनर्जन्म: संचित कर्मो का फल भोगने के लिए पुनर्जन्म अवश्यंभावी है। अनेक अनुसंधानों एवं प्रत्यक्ष उदाहरणों से सिद्ध हो चुका है कि आत्मा अमर है और कर्मो के बन्धन के कारण उसका बार-बार पुनर्जन्म होता है। डॉ. पान्डुरंग वामन काणे ने *'धर्म-शास्त्र का इतिहास'* में बृहदारण्यक उपनिषद के श्लोकों-3/3/13 तथा 4/4/5ग को उद्धृत करते हुए लिखा है कि इस जीवन में किए गये कर्म व आचरण मनुष्य के भावी जीवन का निर्माण करते हैं। वर्तमान जीवन-प्राणी द्वारा अतीत के जीवन या जीवनों में किए गये कर्मो पर निर्भर है। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान लोवेस डिक्सन ने अपनी रचना- 'Religion and Mortality' में विचार व्यक्त किया है कि ''वास्तव में यह सन्तोषप्रद भावना है कि हमारी वर्तमान समर्थताएं हमारे गत जीवन के कार्यों द्वारा निर्धारित होती है और हमारे वर्तमान कर्म पुन: हमारे भावी जीवन निर्धारित करते हैं।''

गीता में लिखा है कि जातस्य हि ध्रुवा मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतश्च (2/27)

अर्थात् जन्मे हुए की मृत्यु और मरने वाले का जन्म अवश्य होता है।

(6) वर्णाश्रम व्यवस्था: मि. ड्यूसन ने अपनी कृति ''Philosophy of Upnishads'' में लिखा है कि मानव समाज के इतिहास को इतनी उपलब्धि नहीं है कि इस विचार-आश्रम-व्यवस्था की उत्कृष्टता के निकट जा सके।

(क) आश्रम व्यवस्था: व्यष्टि रूप में वैदिक संस्कृति में जीवन को चार भागों में बांटा गया है। 'शतपथ ब्राह्मण' में विधान किया गया है कि ''ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृहीम भवेत् गृहीम भूत्वावनी भवेद्वनीयभूत्वा प्रवृजेता।'' अर्थात् वैदिक मान्यतानुसार जीवन आयु को सौ वर्ष मानते हुए जीवन के प्रथम 25 वर्षो में ब्रह्मचर्य आश्रम जिसमें मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए शक्ति और ज्ञानार्जन करता है। 26 से 50 वर्ष की आयु गृहस्थ जीवन व्यतीत करने का विधान है जिसमें 25 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् व्यक्ति विवाह बन्धन के उपरान्त गृहस्थ जीवन में प्रवेश करके सन्तान पैदा करते हुए धनार्जन द्वारा अपने परिवार के साथ-साथ अन्य वर्णो के जीवन-निर्वाह में सहयोग देता है। 50 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर तथा जब पुत्र की सन्तान भी पैदा हो जाये तब मनुष्य को गृहस्थ त्याग कर वन में अथवा अन्य किसी प्राकृतिक स्थान में जाकर धर्म प्रचार एवं जन सेवा व परोपकार के कार्य में संगलन होने का विधान किया गया है। 75 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर एवं वैराग्य की भावना उत्पन्न होने पर संसार का मोह त्याग कर संन्यासी होने का विधान है। सन्यासी का कर्त्तव्य है कि वह गेरुए वस्त्र धारण कर एकान्त में जाकर ईश्वर उपासना, साधना व तपस्या करे एवं आत्मोन्नति द्वारा मोक्ष को प्राप्त करे।

(ख) वर्ण व्यवस्था: वैदिक संस्कृति में समष्टि रूप में समाज को चार वर्णों में विभक्त किया गया है। युजर्वेद के 31/11 में लिखा है-

ब्राह्मणो स्य मुखामासीद, बाहू: राजन्य:कृत:।

उरू तुदस्य यद्वैश्य पदम्याम: शूद्रो जायत:।।

अर्थात् समाज का मुख ब्राह्मण है, भुजाएं क्षत्रिय हैं, उदर वैश्य तथा पैर शूद्र हैं। तदनुसार ब्राह्मण का कार्य विद्या प्रदान करना, शास्त्रों को पढ़ना-पढ़ाना एवं सभी वर्णों के संस्कार कराना, क्षत्रिय का कार्य राष्ट्र व समाज की रक्षा व कल्याण हेतु शासन करना तथा सेना व पुलिस में कार्य करना। वैश्य का कार्य कृषि और उद्योग एवं व्यापार करना और शूद्र का कार्य सेवा करना है। चारों वर्ण जन्म के आधार पर निर्धारित न होकर गुण-कर्म स्वभाव के आधार पर निर्धारित होने चाहिए। महाभारत के शान्ति पर्व के अध्याय 185 में स्पष्ट किया गया है कि चारों वर्णो के धार्मिक व सामाजिक अधिकार एवं चरित्रिक मानदण्ड के स्तर समान होने चाहिए। वर्ण व्यवस्था का आधार केवल आर्थिक नहीं, अपितु मनोवैज्ञानिक भी है। वास्तव में चे चारों वर्ण चार प्रकार की वृत्तियां नहीं अपितु प्रवृत्ति हैं। वर्ण व्यवस्था का सिद्धान्त समाज के ध्येय को सम्मुख रखते हुए उसके अभीष्ट विकास का सिद्धान्त है। वेद द्वारा प्रतिपादित वर्णव्यवस्था पूर्ण स्वाभाविक, वैज्ञानिक तथा सार्वभौमिक है। महाभारत युद्ध के पश्चात् कालान्तर में वर्ण व्यवस्था का स्वरूप गुण-धर्म-स्वभाव पर आधारित होने के स्थान पर जन्मना जातिगत हो गया।

(7) संस्कार: वैदिक संस्कृति में मानव निर्माण हेतु 16 संस्कारों का विधान किया गया है। महर्षि चरक के मतानुसार व्यक्ति में पूर्व विद्यमान विकारों को हटा कर सद्गुणों को धारण करना ही संस्कार हैं। वास्तव में कर्म की आत्मा पर पड़ी निशानी का नाम ही संस्कार है। संस्कार ही व्यक्ति के स्वभाव व चरित्र का निर्धारण करते हैं। शुभ संस्कार ही सुन्दर जीवन का निर्माण करते हैं। शास्त्रों में निम्नलिखित 16 संस्कारों का विधान किया गया है :-

(1) गर्भाधान संस्कार (2) पुंसवन (3) सीमन्तोनयन (4) जातकर्म (5) नामकरण (6) निष्क्रमण (7) अन्नप्राशन (8) चूड़ाकर्म (9) कर्णभेद (10) उपनयन (11) वेदारम्भ (12) समावर्तन (13) विवाह संस्कार (14) वानप्रस्थ (15) संन्यास (16) अन्त्येष्टि संस्कार। **क्रमश:**

-गौरीशंकर भारद्वाज, पूर्व विधायक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

02 नवम्बर से 08 नवम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5 नवम्बर/ 6 नवम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 04 नवम्बर, 2015

प्रतिष्ठा में,

स्वास्थ्य चर्चा

पेट बढ़ने पर

1. त्रिफला अर्क एक तिहाई कप पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय दें।
2. बायबिंडग अर्क एक तिहाई कप पानी मिलाकर दिन में तीन बार पीयें।
3. आरोग्यवर्द्धनीवटी 2-2 गोलियां पुनर्नवारिष्ट 4-4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय दें।

पेट के रोग में

1. असंगध 100 ग्राम पीसकर 5-5 ग्राम दवा को घी में मिलाकर खांड मिला कर गर्म दूध से प्रात: सांय लें। इससे प्रसूत, गठिया, वीर्य वृद्धि में लाभ मिलता है।
2. 50 ग्राम अजवायन काला नमक 10 ग्राम को नींबू रस में पर तक भिगोएं। खुश्क होने पर मूली के रस में भिगोएं। खुष्क होने पर छाया में सूखा लें। दो-दो ग्राम प्रात: सायं भोजन के बाद पानी से लें।
3. त्रिफला पिसा 100 ग्राम में खांड 65 ग्राम मिलाकर 5 ग्राम प्रात: सायं भोजन के बाद पानी से लें।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित "चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद" पुस्तक से साभार यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में भी उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

महासम्मेलनों जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2006 रोहिणी दिल्ली के स्वागताध्यक्ष की जिम्मेदारी का आपने बहुत कुशलतापूर्वक निर्वहन किया एवं वर्ष 2012 के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली के मुख्य यजमान के रूप में इसे सम्पन्न करने में अपना पूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया। समाज में आपकी पहचान न केवल एक सफलतम व्यवसायी के रूप मे हुई अपितु यज्ञ प्रेमी रूप में पहचाना जाना आपके परिवार के यज्ञ के प्रति प्रेम को दर्शाता था। लगभग 92 वर्ष की आयु होने पर भी आज आप आर्यसमाज के सत्संगों में सम्मिलित होने से अपने आपको रोक नहीं पाते थे, जो आपके हृदय में आर्यसमाज के प्रति लगाव का ही प्रतीक था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के पदाधिकारियों सर्वश्री धर्मपाल आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, ओम प्रकाश आर्य एवं श्री सुरेन्द्र रैली जी ने उनके निवास पर पहुंचकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से लोधी रोड मुक्तिधाम में किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 4 नवम्बर, 2015 को इन्दिरा गांधी इण्डोर स्टेडियम में किया गया, जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उप प्रधान, श्री शिव कुमार मदान, आर्यसन्देश के सह व्यवस्थापक श्री एस. पी. सिंह ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, केन्द्रीय सभा के प्रधान एवं एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी, महामन्त्री श्री राजीव आर्य ने अपने शोक पत्र भेजकर संवेदनाएं व्यक्त की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह